Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

खादी में महात्मा गाँधी के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन

www.ignited.in

खादी में महात्मा गाँधी के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. Meena Ambesh*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध पत्र सारांश:- *प्रस्तुत शोध पत्र में, खादी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। खादी एक हाथ से कटा और बुना हुआ कपड़ा है। कच्चे माल के रूप में कपास, रेशम या ऊन का उपयोग करके, उन्हें खादी धागा बनाने के लिए एक चरखे (एक पारंपरिक कताई मशीन) पर काटा जाता है। हजारों सालों से हाथ से कताई और बुनाई का काम चल रहा है। सिंधु सभ्यता में कपड़े की परंपरा अच्छी तरह से विकसित हुई थी। खादी की प्राचीनता का सबसे प्रमुख प्रमाण मोहनजोदड़ो की पुजारी प्रतिमा है, जिसे कंधे पर एक लबादा पहने दर्शाया गया है और इसमें इस्तेमाल किए गए रूपांकन अभी भी आधुनिक सिंध, गुजरात और राजस्थान में देखे जा सकते हैं। भारतीय कपड़े की सुंदरता और जीवंतता के कई अन्य उल्लेख हैं क्योंकि सिकंदर ने भारत पर आक्रमण के दौरान मुद्रित और चित्रित कपास की खोज की थी। उन्होंने और उनके उत्तराधिकारियों ने व्यापार मार्गों की स्थापना की जिन्होंने अंततः एशिया और यूरोप में कपास की शुरुआत की। 'खादी लंबे समय से देश की स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति से जुड़ी रही है, यह शब्द महात्मा गांधी और उनके स्वदेशी आंदोलन की छवि के लिए अग्रणी था। खादी एक कपड़े के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द है जिसमें आमतौर पर कपास के रेशों को हाथ से काटा जाता है। खादी को भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा पुनर्जीवित किया गया था, जिन्होंने इसकी क्षमता को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनने और गाँवों में वापस लाने के लिए एक उपकरण के रूप में देखा था। 1920 में महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन में खादी को एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया था। महात्मा गांधी ने 1920 के दशक में भारत में ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी की कताई को बढ़ावा देना शुरू किया, इस प्रकार खादी स्वदेशी आंदोलन का एक अभिन्न अंग और प्रतीक बन गया।*

मुख्य शब्द:- *खादी प्राचीन समय में, खादी, खादी और ग्रामोद्योग आयोग में महात्मा गांधी का योगदान*

---------------------------------X---------------------------------

परिचय:

खादी एक हाथ से कटा और बुना हुआ कपड़ा है। कच्चे माल के रूप में कपास, रेशम या ऊन का उपयोग करके, उन्हें खादी धागा बनाने के लिए एक चरखे (एक पारंपरिक कताई मशीन) पर काटा जाता है। 'खादी' लंबे समय से देश की स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति से जुड़ी रही है, यह शब्द महात्मा गांधी और उनके स्वदेशी आंदोलन की छवि के लिए अग्रणी था। खादी एक कपड़े के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द है जिसमें आमतौर पर कपास के रेशों को हाथ से काटा जाता है। हालांकि, एक लोकप्रिय धारणा के विपरीत, खादी रेशम और ऊन से भी बनाई जा सकती है, जिन्हें क्रमशः ऊनी खादी के रूप में जाना जाता है। इस कपड़े की बनावट गर्मियों में आरामदायक और सर्दियों के दौरान गर्म रहने की क्षमता के लिए जानी जाती है।

उद्देश्य:

1. खादी में महात्मा गांधी के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है।

2. देश में खादी की स्थिति पर चर्चा की गई है।

3. इस शोध पत्र में खादी का महत्व वर्णित है।

परिकल्पना:

1. महात्मा गांधी का खादी उपयोग स्वदेशी का हिस्सा रहा है।

2. महात्मा गांधी के खादी प्रयोग का समाज पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संकलन प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। माध्यमिक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

प्राचीन काल में खादी:

हजारों सालों से हाथ से कताई और बुनाई का काम चल रहा है। सिंधु सभ्यता में कपड़े की परंपरा अच्छी तरह से विकसित हुई थी। खादी की प्राचीनता का सबसे प्रमुख प्रमाण मोहनजोदड़ो की पुजारी प्रतिमा है, जिसे कंधे पर एक लबादा पहने दर्शाया गया है और इसमें इस्तेमाल किए गए रूपांकन अभी भी आधुनिक सिंध, गुजरात और राजस्थान में देखे जा सकते हैं। भारतीय कपड़े की सुंदरता और जीवंतता के कई अन्य उल्लेख हैं क्योंकि सिकंदर ने भारत पर आक्रमण के दौरान मुद्रित और चित्रित कपास की खोज की थी। उन्होंने और उनके उत्तराधिकारियों ने व्यापार मार्गों की स्थापना की, जिन्होंने अंततः एशिया और यूरोप में कपास की शुरुआत की।

खादी को भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा पुनर्जीवित किया गया था, जिन्होंने इसकी क्षमता को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनने और गाँवों में वापस लाने के लिए एक उपकरण के रूप में देखा था। 1920 में महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन में खादी को एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया था। उन्होंने जल्द ही महसूस किया कि इस हस्तनिर्मित कपड़े का उत्पादन और बिक्री हमारे दैनिक में अनुमोदन के लिए महत्वपूर्ण है, जो परिवर्तन का प्रतीक है। गांधीजी ने खादी को स्वदेशी आंदोलन का पर्याय बना दिया।

ब्रिटिश राज बहुत अधिक कीमत पर भारतीयों को कपड़े बेच रहा था और भारतीय मिल मालिक खुद भारतीय बाजार पर एकाधिकार करना चाहते थे। गांधीजी द्वारा खादी आंदोलन का उद्देश्य विदेशी कपड़े का बहिष्कार करना था। महात्मा गांधी ने 1920 के दशक में भारत में ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी की कताई को बढ़ावा देना शुरू किया, इस प्रकार यह खादी स्वदेशी आंदोलन का एक अभिन्न अंग और प्रतीक बन गया।

खादी में महात्मा गांधी का योगदान:

वीआर देविका, जिन्होंने महात्मा गांधी और उनकी संवाद रणनीति का अध्ययन किया है, का कहना है कि गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में खादी को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। देविका गांधी के इंग्लैंड में कम कपड़े पहनने के तरीके को मन के नियंत्रण के अद्भुत उदाहरण के रूप में देखती है।

1915 में जब गांधी भारत आए, तो ब्रिटिश कपड़ों का उद्योग अपने चरम पर था। अंग्रेज भारत से कच्चा माल लेकर कपड़े तैयार करते थे और फिर वे भारत में ही इन तैयार कपड़ों को बेचते थे। स्थानीय उद्योग बर्बाद हो गए। स्थानीय लोग परेशान थे।

यद्यपि स्वदेशी आंदोलन पहले से ही चल रहा था, लेकिन गांधी ने पहले देश के दौरे के दौरान इसकी गंभीरता का एहसास किया जो उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को पूरी तरह से करने से पहले किया था।

देश में आम लोगों की स्थिति को देखकर, खादी ने उन्हें प्रभावी हथियार दिखाया जिसके साथ वे दोनों पक्षों, शासक और शासितों के साथ संवाद कर सकते थे। एक ओर, स्थानीय खादी को बढ़ावा देने ने गांधी को अंग्रेजी उद्योग को नष्ट करने के लिए सबसे अहिंसक हथियार के रूप में दिखाया। दूसरी ओर, जिन भारतीय लोगों को धर्म और जाति में विभाजित किया गया था, उन्हें जोड़ने के लिए एक सटीक नुस्खा भी मिला। स्थानीय लोगों को रोजगार आदि के मामूली लाभ थे।

इसका एक उदाहरण चंपारण सत्याग्रह के दौरान देखने को मिलता है। जब साबरमती आश्रम की प्रथा के अनुसार गांधी चंपारण गए, तो उन्होंने वहां खादी भी पहनी। इस पर, इरविन नाम के एक पत्रकार ने द पायनियर अखबार में एक पत्र लिखा जिसमें महात्मा गांधी पर नौटंकी करने का आरोप लगाया गया था कि वह आम जनता को मूर्ख बनाने के लिए ऐसा कर रहे थे, जबकि सच्चाई यह है कि हर पढ़ा-लिखा अमीर केवल कपड़े पहनता है पश्चिमी संस्कृति में खुद को दूसरों से बेहतर मानते हैं।

इसके जवाब में, महात्मा गांधी का एक पत्र 30 जून 1917 को इस समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था। उन्होंने लिखा था कि वे पोशाक के प्रभाव से अच्छी तरह से वाकिफ हैं और उन्होंने फैसला किया है कि अब वह स्वयं या अपने सहयोगियों के साथ ही खादी की बुनी पहनेंगे। जो पूरी तरह से स्वदेशी होगा। इरविन के पत्र का हवाला देते हुए, गांधी ने आगे लिखा कि लेखक का मानना है कि

मैंने लोगों पर तत्काल प्रभाव डालने के लिए एक विशेष प्रकार का कपड़ा पहना है। जबकि हकीकत कुछ और है। मैंने इस राष्ट्रीय पोशाक को पहना क्योंकि यह भारतीय बनने का सबसे अच्छा तरीका भी है। मेरा मानना है कि अंग्रेजी कपड़े पहनने से हमारा पतन और कमजोरी दिखाई देती है। इसे पहनकर हम एक राष्ट्रीय पाप कर रहे हैं क्योंकि एक साथ हम उन कपड़ों की अनदेखी कर रहे हैं जो भारतीय पर्यावरण के अनुकूल हैं। खादी सस्ती, सरल और साफ-सुथरी भारतीय परिवेश के अनुकूल है।

भारतीय होने और इस पर गर्व करने की इस भावना की उस समय सख्त जरूरत थी। इसीलिए, धीरे-धीरे गांधी खादी को आत्मसात करते गए। ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन की स्थापना वर्ष 1919 में हुई थी। इससे स्वदेशी आंदोलन को भी फायदा हुआ। 1920 तक, खादी और गांधी एक हो गए। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने भारत पर कब्जा नहीं किया है, बल्कि हमने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी है। उनका मतलब था कि अंग्रेज अपनी ताकत के कारण नहीं बल्कि हमारी कमजोरी के कारण भारत पर शासन कर रहे हैं।

गांधी ने 1945 में जमनालाल बजाज के सबसे छोटे बेटे राम कृष्ण बजाज के साथ बंगाल की यात्रा की। बजाज परिवार ने खादी का उपयोग करने के लिए गांधी के आह्वान का समर्थन किया। देविका कहती हैं कि गांधी 3 सितंबर 1921 को कलकत्ता से मदुरै आए, जहाँ उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को धोती में देखा। उनके पास अपने पूरे शरीर को ढंकने के लिए पर्याप्त कपड़ा नहीं था। उसी समय, गांधी ने यह भी तय किया कि वह भी वही कपड़ा पहनेंगे, ताकि उनके शरीर का आवश्यक हिस्सा ढंका रहे। इस तरह गांधी ने अपने शरीर को ढंकने के लिए कम और कम कपड़े का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। यह क्रम 1948 तक चलता रहा।

इससे पहले, 8 दिसंबर 1921 को, उन्होंने यंग इंडिया में लिखा था कि चरखा समृद्धि के साथ-साथ देश की स्वतंत्रता का प्रतीक है। गांधी के आह्वान पर, प्रत्येक स्वतंत्रता सेनानी ने अपने लिए कपड़े तैयार करने के लिए चरखा चलाया।

गांधी यह सब इसलिए कर रहे थे ताकि वे देश के आम लोगों के मुद्दों को उठा सकें और उन्हें बड़े लक्ष्य (स्वतंत्रता संग्राम) में शामिल कर सकें। यह तरीका सफल भी रहा। खादी, चंपारण या खेड़ा सत्याग्रह के मुद्दे गांधी को लोगों से जोड़ने का एक जरिया थे। बातचीत के लिए सही समय पर सही मुद्दे को उठाना।

विशेषकर खादी जिसका एक गौरवशाली इतिहास था। हर घर इससे जुड़ा था। वह एक राजनीतिक हथियार बनने के लिए तैयार बैठा था, उसे बस उसकी जरूरत थी जो उसकी ताकत को समझे। गांधी ने इसे समझा और घोषित किया कि खादी केवल एक कपड़ा नहीं है बल्कि एक जीवन शैली है। महात्मा गांधी ने 1927 में खादी यात्रा भी निकाली थी।

खादी के ऐतिहासिक महत्व के बारे में दस्तावेज बताते हैं कि प्राचीन भारत में, चरखा हर घर का एक हिस्सा था। मौर्य वंश और बाद के शासन के दौरान भी खादी की बहुत समृद्ध परंपरा रही है। विदेशी पर्यटकों जैसे कि मार्को पोलो ने 1228 में भारतीय कपड़ों की गुणवत्ता के बारे में लिखा था।

लेकिन डोर-टू-डोर की इस खूबसूरत परंपरा पर तब ध्यान दिया जाने लगा जब पुर्तगाली, फ्रांसीसी और ब्रिटिश एक ही सदी में भारतीय भूमि पर आने लगे।

अंग्रेजों ने यहां ईस्ट इंडिया कंपनी बनाई जिसका मुख्य उद्देश्य यहां से कच्चा माल लेना था। कपड़ा उद्योग भी इसमें उनका लक्ष्य था। अंग्रेजों ने अपने उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय कपड़ा उद्योग (खादी) को बर्बाद कर दिया।

वर्ष 1866 में, जॉन फोब्र्स वॉटसन नामक एक व्यक्ति ने एक कपड़े संग्रहालय की शुरुआत की, जिसमें 7,000 से अधिक ऐसे कपड़े थे, जिन्हें भारतीय पहनते थे। बाद में यह सब एक पुस्तक के रूप में आया, जिसका नाम था 'द टेक्सटाइल निर्माता और भारत के लोगों की वेशभूषा'। इसका फायदा उठाते हुए, अंग्रेजी मिलों ने अपने सबसे बड़े बाजार के लिए कपड़ा बनाना शुरू कर दिया।

इस आंकड़े को इसके प्रभाव को समझने के लिए देखा जा सकता है। 1849 में, अंग्रेजी उद्योग का मूल्य दो मिलियन पाउंड था। लगभग 40 साल बाद, यह बढ़कर लगभग 27 मिलियन पाउंड हो गया।

एक ओर, जब अंग्रेजी कपड़े उद्योग छलांग और सीमा से बढ़ रहा था, भारतीय उद्योग रसातल में जा रहा था। इससे सबसे ज्यादा प्रभावित देश के बुनकर और इस काम में लगे सामान्य मजदूर थे। स्थिति इतनी खराब हो गई कि 1891 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देश के लोगों से केवल स्वदेशी सामान खरीदने की अपील की।

लेकिन खादी ने स्वतंत्रता आंदोलन को लड़ना शुरू कर दिया जब 1903 में ब्रिटिशों ने बंगाल का विभाजन किया। कपड़ा व्यापार के लिए प्रसिद्ध बंगाल को पूर्व और पश्चिम बंगाल में विभाजित किया गया था। उसी समय, दादा भाई नैरोबी ने दूसरा स्वदेशी आंदोलन शुरू किया (पहला उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में

था)। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में बंगाल अंग्रेजों के खिलाफत का गढ़ बन गया। जिसमें अबके बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश आदि शामिल थे। वैसे, अंग्रेजों ने बहाना बनाया कि बंगाल के विभाजन के पीछे प्रशासन की सुविधा उनका मुख्य उद्देश्य था। लेकिन धार्मिक आधार पर साझा करना उनके भाग्य के बारे में स्पष्ट था।

इसके विरोध में एक दूसरा स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जिसमें अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार शुरू हुआ। इस आंदोलन में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार शुरू हुआ।

1905 के आते-आते लोगों में गुस्सा था, जिसमें अंग्रेजी मिलों में बने कपड़ों को जलाया जाने लगा।

वर्ष 1915 में भारत में महात्मा गांधी के आगमन ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को और धार दी। उन्होंने जल्दी से खुद को खादी के एक मजबूत समर्थक के रूप में स्थापित किया।

खादी और ग्रामोद्योग आयोगः

संसद 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग अधिनियम 1956' के तहत भारत सरकार द्वारा बनाई गई वैधानिक संस्था है। यह भारत में खादी और ग्रामोद्योग से संबंधित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (भारत सरकार) के भीतर एक सर्वोच्च निकाय है, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में खादी और ग्रामोद्योग की स्थापना और विकास के लिए प्रचार, योजना है।, सुविधाओं और सहायता प्रदान करने के लिए, जिसमें वह आवश्यकतानुसार ग्रामीण विकास के क्षेत्र में काम करने वाली अन्य एजेंसियों की मदद भी लेता है। इसका मुख्यालय मुंबई में है, जबकि अन्य प्रभागीय कार्यालय दिल्ली, भोपाल, बैंगलोर, कोलकाता, मुंबई और गुवाहाटी में स्थित हैं।

खादी को पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा और उत्तर पूर्वी राज्यों से रेशम सहित कच्चे माल के आधार पर भारत के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त किया जाता है, जबकि कपास आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से प्राप्त होता है। ऐसा होता है। पाली खादी की खेती गुजरात और राजस्थान में की जाती है जबकि हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर में ऊनी खादी के लिए जाना जाता है।

एक बार इंग्लैंड के प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल ने महात्मा गांधी को 'आधा नग्न फकीर' कहा था। गांधी ने भी चर्चिल की इस उपेक्षित भावना को बहुत सकारात्मक रूप से देखा। शायद इसलिए कि चर्चिल गांधी को जो देखना और बोलना चाहते थे। 1930 के गांधी के दांडी मार्च से स्तब्ध चर्चिल को यह बात पूरी दुनिया और दुनिया के लिए पचाने में मुश्किल हो रही थी कि अक्टूबर की हड्डी-ठंढी ठंढ में बहुत कम खादी-पहने पानी के जहाज में एक भारतीय कैसे इंग्लैंड आ गया। है। दूसरी ओर, गांधी दुनिया को बताना चाहते थे कि अब प्रत्येक भारतीय में आत्मनिर्भरता और आत्म-सम्मान की भूख है।

निष्कर्षः

महात्मा गांधी ने भारत में ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी की कताई को बढ़ावा देना शुरू किया, इस प्रकार यह खादी स्वदेशी आंदोलन का एक अभिन्न अंग और प्रतीक बन गया। लगभग सभी प्रक्रियाओं के औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण के मद्देनजर भारत जैसे श्रमिक अधिशेष देश के लिए खादी और ग्रामोद्योग का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। खादी और ग्रामीण उद्योग का एक और लाभ यह है कि उन्हें स्थापित करने के लिए कोई (या सभी कम) पूंजी की आवश्यकता नहीं है, जो उन्हें ग्रामीण गरीबों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य विकल्प बनाता है। कम आय, क्षेत्रीय और ग्रामीण / शहरी विषमताओं के मद्देनजर भारत के संदर्भ में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। आजादी के बाद से, खादी की यात्रा परंपराओं और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखने के बारे में रही है। खादी एक परंपरा है, लेकिन हर परंपरा को बदलना पड़ता है। आज खादी में स्वीकृति की एक नई लहर आई है, जिसे कई फैशन डिजाइनर देख रहे हैं। भारत ने खादी उत्पादों में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

संदर्भ सूची:-

1. गांधी, मोः मेरे सपनों का भारत, भार्गव भूषण पेंस, वाराणसी
2. सीता रमैया, वी.पी.: गांधी और गांधीवाद भाग -2, इलाहाबाद 1942
3. भट्टाचार्य, प्रभातः गांधी दर्शन, नई दिल्ली 1969
4. कुमार प्रशांत, महात्मा गांधी स्वदेशी की रक्षा, सर्व सेवा संघ, प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
5. विनोबा भावे खादी विचार - सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, 1967।
6. शिव राम पल्ली, खादी विचार, पृष्ठ संख्या -14

7. मोहनदास करमचंद गांधी - सत्य के प्रयोग, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2013, पृष्ठ संख्या -307

8. विनोबा साहित्य, खंड 15, पृष्ठ संख्या - 170

9. प्रतियोगिता दरपन लेख (खादी और ग्रामोद्योग भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक) जनवरी 2011, पृष्ठ संख्या - 1068

10. श्री कृष्ण दास जाजू, चरखा पुनर्जीवन, पृष्ठ संख्या -18

11. राजा राधिकरण प्रसाद सिंह, गांधी टोपी पृष्ठ संख्या - 202

12. बीएल ग्रोवर और यशपालः आधुनिक भारत का इतिहास। चांद एंड कंपनी लिमिटेड, रामनगर नई दिल्ली 9 वां संस्करण 1995

13. सोढ़ी, मंजीत सिंहः भारत का इतिहास (1857-1950) आधुनिक प्रकाशक, जालंधर, दूसरा संस्करण, 2006

Corresponding Author

Dr. Meena Ambesh*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan